International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-9, Issue-1 Jan-Feb-2022
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

आगरा जनपद की स्थापत्य कला का एक ऐतिहासिक अध्ययन

निहाल सिंह जाटव,

अस्सिटेंन्ट प्रोफेसर (विषय इतिहास)

महर्षि अरबिन्द महाविद्यालय खेरली (अलवर)

सारांश आगरा के दो इतिहास हैं, पहला यमुना नदी के बाएं तट पर पूर्वी दिशा की ओर स्थित कृष्ण और महाभारत की किंवदंतियों में वर्णित प्राचीन नगर का, जिसे सिंकदर लोदी द्वारा 1504–1505 में पुनः स्थापित किया गया था, और दूसरा नदी के दाहिने किनारे पर स्थित आधुनिक नगर का, जो 1558 में अकबर द्वारा स्थापित किया गया था, और आज विश्व भर में ताज–नगरी के रूप में जाना जाता है। प्राचीन आगरा की नींव के कुछ निशानों को छोड़कर अब कुछ नहीं बचा है। यह भारत में हुए मुस्लिम आक्रमणों से पहले विभिन्न हिंदू राजवंशों के अंतर्गत एक महत्वपूर्ण स्थान था, लेकिन इसका इतिहास अस्पष्ट है। 17 वीं शताब्दी के इतिहासकार अब्दुल्लाह ने लिखा है कि सिकंदर लोदी के शासनकाल से पहले यह एक गांव था और यहाँ के पुराने किले का प्रयोग मथुरा के राजा द्वारा जेल के रूप में किया जाता था। नगर का विनाश 1017 में महमूद गजनवी द्वारा किए गए विध्वंस के परिणाम स्वरूप हुआ। मसूद साद सलमान ने दावा किया है कि वह वहीं था, जब महमूद ने आगरा पर आक्रमण किया, राजा जयपाल ने स्थिति की भयावहता को देखकर आत्मसमर्पण कर दिया था, परन्तु फिर भी महमूद नगर को लूटने के लिए आगे बढ़ गया।

प्रस्तावना

आगरा का ऐतिहासिक महत्व दिल्ली सल्तनत के अफगान शासक सुल्तान सिकंदर लोधी के शासनकाल (1489–1517)[1] के समय शुरू हुआ। सिकंदर लोधी ने एक नवीन नगर की स्थाापना के लिए एक आयोग नियुक्त किया, जिसने दिल्ली से इटावा तक यमुना के दोनों किनारों का निरीक्षण और सर्वेक्षण किया, और अंत में नगर की स्थापना के लिए यमुना के पूर्व दिशा की ओर एक स्थान चुना। 1504–1517 में सिकंदर लोदी ने आगरा का पुनर्निर्माण किया और इसे सल्तनत की राजधानी बना दिया।[2] यमुना के बाएं किनारे पर स्थित आगरा लोधी शासनकाल में शाही अधिकारियों, व्यापारियों, विद्वानों, धर्मशास्त्रियों और कलाकारों की उपस्थिति के साथ एक बड़े एवं समृद्ध नागर के रूप में विकसित हुआ। यह भारत में इस्लामी शिक्षा के सबसे महत्वपूर्ण केंद्रों में से एक बन गया। सुल्तान ने नगर के उत्तर में सिकंदरा ग्राम की भी स्थापना की और वहां 1495 में लाल बलुआ पत्थर की एक बाबड़ी बनाई, जिसे जहांगीर ने एक मकबरे में बदल दिया था, और अब अकबर की महारानी मरियम–उज–जमानी के मकबरे के रूप में जाना जाता है।[3] 1518 में सुल्तान की मृत्यु के बाद आगरा उसके पुत्र इब्राहिम लोदी (शासनकाल 1518–26)[4] के पास चला गया, जिसने 1526 में पानीपत के प्रथम युद्ध में मुगल सम्राट बाबर के हाथों अपनी मृत्यु तक आगरा से ही दिल्ली सल्तनत पर शासन किया।[5] आगरा का स्वर्ण युग मुगलों के साथ शुरू हुआ। 1658 तक आगरा मुगल साम्राज्य की राजधनी होने के साथ–साथ भारतीय उप–महाद्वीप का सबसे प्रमुख शहर था, जिसे बाद में औरंगज़ेब ने राजधानी और पूरे दरबार को दिल्ली स्थानांतरित कर दिया।[6]

मुगल वंश के संस्थापक बाबर (शासनकाल 1526–30)[7] ने 1526 में पानीपत के प्रथम युद्ध में लोधी और ग्वालियर के तोमरों को हराकर आगरा पर अधिकार कर लिया।[8] पानीपत के युद्ध के तुरंत बाद आगरा के साथ बाबर का संबंध शुरू हुआ। उसने अपने बेटे हुमायूँ को आगे भेजा, जिसने निर्विरोध नगर पर अधिकर कर लिया। पानीपत में मारे गए ग्वालियर के राजा ने अपने परिवार और अपने कबीले के मुखियाओं को आगरा में छोड़ दिया था। हुमायूँ ने उनके साथ उदारता से व्यवहार किया और उन्हें लूट से बचाया, जिस कारण उन्होंने श्रद्धांजलि के रूप में मुगलों को बहुत सारे गहने और कीमती रत्न भेंट किए, जिनमें प्रसिद्ध कोहिनूर हीरा भी था। बाबर ने यमुना नदी के तट पर भारत के पहले औपचारिक मुगल उद्यान, आराम बाग की स्थापना की। बाबर आगरा में अपनी राजधानी स्थापित करने के लिए दृढ़ था। लेकिन इस क्षेत्र की उजाड़ स्थिति से लगभग निराश था, जैसा कि उसके संस्मरण, बाबरनामा के इस उद्धरण से स्पष्ट है।

मुझे हमेशा ऐसा लगता है कि हिंदुस्तान की सबसे प्रमुख कमियों में से एक कृत्रिम जलकुंडों की आवश्यकता है। मेरी इच्छा थी कि जहाँ भी मैं अपना निवास स्थान तय करूँ, वहाँ पनचक्कियाँ लगाऊँ, एक कृत्रिम धारा का निर्माण करूँ, और एक सुंदर व नियमित रूप से नियोजित आनंद स्थल बनाऊँ। आगरा आने के कुछ ही समय बाद मैंने इस विचार को ध्यान में रखते हुए जमुना को पार किया, और एक बगीचे के लिए उपयुक्त स्थान का चयन करने के लिए क्षेत्र की जांच की। यह सब इतना भद्दा और घृणास्पद था कि मैं निराश होकर वापस नदी पार लौट आया। सुंदरता की कमी और क्षेत्र के अप्रिय पहलुओं के परिणामस्वरूप मैंने चारबाग बनाने का इरादा छोड़ दिया, लेकिन क्योंकि आगर के आस–पास कोई बेहतर परिस्थिति सामने नहीं आयी, तो में आखिरकर उसी जगह को सर्वश्रेष्ठ बनाने के लिए मजबूर हो गया.... हर कोने में मैंने उपयुक्त बगीचे लगाए, हर बगीचे में मैंने नियमित रूप से गुलाब और नरगिस बोए, और इन्हें एक दूसरे के अनुरूप फुलवारियों में लगाया। हिन्दुस्तान में हम तीन चीजों से परेशान थे, एक उसकी गर्मी, दूसरी तेज हवाएं और तीसरी उसकी धूल। स्नानागार इन तीनों कष्टों को दूर करने का साधन थे। बाबर के नगर, उसके फलों और फूलों के बगीचों, महलों, स्नानागारों, तालाबों, कुओं और जलकुंडों के बहुत कम अवशेष बचे हैं। बाबर के चारबाग के अवशेष आज यमुना के पूर्व की ओर आराम बाग में देखे जा सकते हैं।[9] बाबर के बाद उसका पुत्र हुमायूँ (शासनकाल 1530–40 और 1555:56)[10] आया, लेकिन ताजपोशी के ठीक नौ साल बाद 1539 में शेर शाह सूरी ने उसे कन्नौज के युद्ध में पराजित कर दिया। सूरी एक अफगान रईस था, जो बाबर के शासनकाल में बिहार का राज्यपाल था। 1540 और 1556 के बीच सूरी ने अल्पकालिक सूरी साम्राज्य की स्थापना की। हालाँकि, इस क्षेत्र को अंततः 1556 में पानीपत के द्वितीय युद्ध में हुमायूँ के पुत्र अकबर द्वारा फिर से जीत लिया गया।

अकबर (शानकाल 1556–1605) औश्र उसके बाद उनके पोते शाहजहाँ के शासन काल में आगरा विश्व इतिहास में अमर हो गया था। अकबर ने यमुना के दाहिने किनारे पर आगरा के आधुनिक शाहर का निर्माण किया, जहाँ इसका अधिकांश हिस्सा अभी भी निहित है। उसने नगर को राजनीतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक महत्व के एक महान केन्द्र के रूप में बदल दिया, और इसे अपने विशाल साम्राज्य के विभिन्न हिस्सों से जोड़ा। अकबर ने आगरा को शिक्षा, कला वाणिज्य और धर्म का केन्द्र बनाने के अलावा, आगरा के किले की विशाल प्राचीरों का भी निर्माण करवाया। इसके अतिरिक्त उसने आगरा से लगभग 35 किमी दूर, फतेहपुर सीकरी में एक नई राजधानी भी बसाई जिसे हालाँकि, अंततः

छोड़ दिया गया।[11] अकबर की मृत्यु से पहले, आगरा पूर्वी विश्व के सबसे बड़े नगरों में से एक बन गया था, जिसके 1584 में आगरा का दौरा करने वाले अंग्रेज यात्री राल्फ फिच ने नगर के बारे में लिखाा है।[12]

आगरा एक बहुत बड़ा नगर है, और साधन आबादी वाला पत्थर से बना है। जिसके पास साफ और बड़ी सड़कें हैं और एक साफ नदी इससे होकर बहती है। आगरा और फतेहपुर सीकरी दो बहुत बड़े नगर हैं, दोनों लंदन से बड़े हैं, और बहुत अधिक आबादी वाले हैं। आगरा और फतेहपुर के बीच बारह मील (वास्तव में कोस) की दूरी है और पूरे रास्ते में भोजन और अन्य चीजों का बाजार है जैसे कि कोई आदमी अभी भी नगर में ही हो, और इतने सारे लोग कि कोई आदमी बाजार में हो।

फिच की इन धारणाओं की पुष्टि एक अन्य यूरोपीय यात्री विलियम फिंच ने की, जिसने आगरा के बारे में टिप्पणी की।

यह विस्तृत, विशाल आबादी वाला है, इतना कि आप बमुश्किल सड़क पार कर सकते हैं। अकबर के उत्तराधिकारी जहांगीर के शासनकाल के दौरान भी आगरा विस्तृत होता और फलता–फूलता रह, जैसा कि उसने अपनी आत्मकथा तुजक–ए–जहाँगीरी में लिखा है। आगरा का निवास्य हिस्सा नदी के दोनों किनारों पर फैला हुआ है। इसके पश्चिम की ओर, जिसकी जनसंख्या अधिक है, इसकी परिधि सात कोस है, और इसकी चौड़ाई एक कोस है। नदी के दूसरी ओर, पूर्व की ओर, बसे हुए भाग की परिधि 2½ कोस है, इसकी लंबाई एक कोस और इसकी चौड़ाई आधा कोस है। लेकिन भवनों की संख्या के मामले में यह इराक, खुरासान और ट्रांस–ऑक्सियाना के कई नगरों के समतुल्य है। केई लोगों ने इसमें तीन या चार मंजिला भवन खड़े कर दिए हैं। लोगों की भीड़ इतनी अधिक है कि गलियों और बाजारों में घूमना मुश्किल है।

निष्कर्ष

अकबर के उत्तराधिकरी जहाँगीर (शासनकाल 1605–27) को वनस्पतियों और जीवों से प्यार था और उसने लाल किले के अंदर कई उद्यान बनाए। सिकंदरा में अकबर का मकबरा जहाँगीर के शासनकाल में बनकर तैयार हुआ था। आगरा के किले में जहाँगीरी महल और एतमदुद्दौला का मकबरा भी जहाँगीर के शासनकाल के दौरान बनाया गया था। जहाँगीर आगरा से अधिक लाहौर और कश्मीर से प्रेम करता था, लेकिन आगरा फिर भी उसके शासनकाल में साम्राज्य का सबसे प्रमुख नगर बना रहा। हालाँकि, वह शाहजहाँ (शासनकाल 1628–58) था, जिसका निर्माण गतिविधि ने आगरा को उसकी महिमा के शिखर तक पहुँचाया। शाहजहाँ, जो वास्तुकला में गहरी रूचि के लिए जाना जाता है, अगरा को अपना सबसे बेशकीमती स्मारक, ताजमहल दिया। उसकी पत्नी मुमताज महल की प्रेमपूर्ण स्मृति में निर्मित यह मकबरा 1656 में बनकर तैयार हुआ था। जामा मस्जिद और किले के अंदर दीवान–ए–आम, दीवान–ए–खास, मोती मस्जिद समेत कई अन्य उल्लेखनीय इमरातें भी शाहजहाँ के आदेश पर ही योजनाबद्ध एवं निष्पादित की गई। शाहजहाँ ने बाद में वर्ष 1648 में राजधानी को शाहजहानाबाद (अब दिल्ली) में स्थानांतरित कर दिया, और उसके बाद उसके बेटे औरंगजेब (शासनकाल 1658–1707) ने 1658 में पूरे दरबार को दिल्ली में स्थानांतरित कर दिया। इसके साथ ही आगरा का पतन तेजी से शुरू हुआ। फिर भी, आगरा का सांस्कृतिक और सामरिक महत्व अप्रभावित रहा और आधिकारिक पत्राचारों में इसे मुगल साम्राज्य की दूसरी राजधानी के रूप में जाना जाता रहा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. "Lodi dynasty/Indian History" Encyclopedia Britannica (अंग्रेजी में) अभिगमन तिथि 10 April 2021
2. Bhanu, Dharma (1979), The Provinco of Agra. Its History and Adminstration (अंग्रेजी में) Concept Publishing Company.
3. Bhanu, Dharma (1979), The Provinco of Agra. Its History and Adminstration (अंग्रेजी में) Concept Publishing Company, P-2-3
4. "Part Fourteen; Sikandra" www.columbia.edu, अभिगमन तिथि 3 April, 2021
5. "01 babur" www.columbia.edu, अभिगमन तिथि 3 April, 2021
6. Bhanu, Dharma (1979), The Provinco of Agra. Its History and Adminstration (अंग्रेजी में) Concept Publishing Company, P-1
7. "Mughal dynasty / History Map, Rules & Facts" Encylopedia Britannica अभिगमन तिथि 10 April, 2021
8. "History Introduction : Part One Babar, Babar's connection with Agra" www.columbia.edu, अभिगमन तिथि 3 April, 2021
9. Bhanu, Dharma (1979), The Provinco of Agra. Its History and Adminstration (अंग्रेजी में) Concept Publishing Company, P-4
10. "Part Sixteen : Fatehpur Sikri" www.columbia.edu, अभिगमन तिथि 14 September, 2020
11. Bhanu, Dharma (1979), The Provinco of Agra. Its History and Adminstration (अंग्रेजी में) Concept Publishing Company, P- 4-5
12. Mukerji, Satya Chandra (1892), The traveller's guide to agra containing and account of the past history of the past history the antiquitions, and the principal sights of Agra, together informaton about agra as it is University of Collontra Delhi, Sen & Co. P-2021